स्वर संतुलन से रोगापचार

चन्द्र स्वर शरीर में ठण्डक तथा सूर्य स्वर शरीर में गर्मी बढ़ाता है। अतः गर्मी सम्बन्धी रोगों में चन्द्र स्वर चलाने से शरीर में शीतलता बढ़ती है, जिससे गर्मी से उत्पन्न असंतुलन दूर हो जाता है।

इसी तरह कफ सम्बन्धी रोगों के अन्दर जैसे-सर्दी, जुकाम, खांसी, दमा आदि में सूर्य स्वर अधिकाधिक चलाने से शरीर में गर्मी बढ़ती है। सर्दी का प्रभाव दूर होता है।

आकस्मिक रोगों में जब रोग का कारण समझ में न आये और चिकित्सक उपलब्ध न हो, रोग की स्थिति में जो स्वर चल रहा है, उसको बन्द कर विपरीत स्वर चलाने से तुरन्त राहत मिलती है।